29-7-67

29-6-67 ओम शान्तिः रात्री क्लास

यह पाठशाला है। पाठशाला में स्टुडण्टस को कभी भी लज्जा आती है क्या? ऐसा तो कब होता ही नही है। अनुभव सुनाना होता है कि 84जन्मो का पार्ट बजा कर अब फिर बाबा पास आये हैं वो फिर पावन बना कर वापस ले जावेंगे। फिर स्वर्ग में आकर हम सुख का पार्ट बजावेंगे। यह तो बहुत सहज है कि हम नाटक के ऐक्टर्स है। यह मण्डवा है अथवा बेहद की स्टेज है। हद की नालेज को तो सभी जानते है इस बेहद की नालेज को कोई भी नही जानता है। वो सिर्फ बेहद का बाप ही जानते है। ऊंच ते ऊंच भगवान निराकार और हम आत्मायें भी ब्रह्मतत्व में रहती है। सन्यासी कहते है ब्रह्मज्ञान तत्वज्ञान। यह आकाश तत्व है नं वो है ब्रह्मलोक। जिसमें हम आत्मायें रहती है। उसको ही स्वीट साईलेन्स होम कहा जाता है। [illegible] हम आत्माओं का घर। बाप समझाते है कि पहले-2 आत्मायें यहाँ पर आकर डीटीजम का पार्ट [illegible] है। उनमें भी नम्बरवार आवेंगे यहां के पुरुषार्थ अनुसार। वृधी में है नां कि पहले डीटीजम था फिर [illegible] इनेस ही फिर वृधी होती है। अनेक धर्म होते है। बौधियों में सभी चीनी-2 है। है तो सभी [illegible]-2 ही नां। है भी बौधी ही। उनकी भी कैसे लडाई लगती रहती है। ब्रमा, सीलान भी बौधी है। आपस में [illegible] के ही कारण दुश्मनी हो गई है। ड्रामा में ही यह नूंध है। [illegible] [illegible] बाप समझाते है कि मैं रचना कैसे रचता हूँ। पहले ब्राहमण फिर देवता सूर्यवंशी [illegible] फिर आते है [illegible] वो लोग तो फिर बौधियों को ही पहले कर देते है। है पहले [illegible] फिर बौधी। अगर पहले [illegible] कहे तो भी क्या है। संशय नही आना चाहिये। बहुत बाते जानने की है। अपने [illegible] को नहीं [illegible] हो तो दूसरे धर्मों में जाने की क्या दरकार है। क्रिश्चयन लोग तो दूसरे धर्म की बात ही नहीं सुनते है। मुसलमान लोग तो कुरान बिना बात भी नहीं करेंगे। तुमी सुनेंगे! बाप आकर समझाते है फिर कहते है कि [illegible] देवी देवता धर्म है। तुम जानते हो कि हमारी तो यादगार भी यहां पर ही है। फिर तो हम देवता बन जाते [illegible] यह मंदिर आदि खलास हो जावेंगे। मूल वतन में आत्मायें निवास करती है तो [illegible] चाहिये? बात थोडी सी। यहां पर नाटकशाला में कितना सब चाहिये। निराकारी झाड और साकारी झाड में कितना फर्क है। तुम तो कहीं पर भी जाओ तो कमाई कर सकते हो। [illegible] में भी जाओ परन्तु [illegible] की [illegible] लिगेटेरियनस तो कहीं पर भी होते ही है। कोई [illegible] [illegible] [illegible] करते हैं। कहीं भी जाओ तो पढाई साथ में है ज्ञान से भी याद सहज है एक ही सेकिन्ड की बात है। परन्तु जितना ही सहज है उतना ही फिर डिफी[illegible] भी है। [illegible] फिर जितना डिफीकल्ट है उतना ही सहज है। याद ही घडी-2 माया भुला देती है। क्यो? तुम माया पर जीत पाते हो इसलिये [illegible] देती है। गुडनाईट

30: 7: 67: -:रात्री क्लास:-: बच्चों को [illegible] [illegible] लिये बाबा [illegible] भी छपता रहे है। 12-15 चित्र है जरूरी-2 है। जिसमें ही गीता का भगवान और पतित पावन की भी पुरी [illegible] है। सीढी है, गोला है, [illegible] कब भी [illegible] [illegible] क्या? कब भी [illegible] नही है। जिन्होंने [illegible] पुरुषार्थ किया है अपना भाग्य बनाया है उनको तो अब भी जरूर बनाना है। [illegible] जितना [illegible] है इसलिये ही [illegible] की तो कोई बात ही नही है2 30×40 के जो चित्र है ऐसे-2 बाबा 12चित्र बनवाते है। बाबा लिखते है कि यह काम कर रहा हूँ। [illegible] [illegible] अपने गुरु से कहे कि मदद करो यह कायदा नही है। बाबा जोर दे रहे है कि जल्दी-2 चित्र बनाने की सर्विस जल्दी से वधी करा पावे। इससे बहुत सर्विस हो सकती है। सारा ज्ञान इसी में आ जाता है। मनुष्य तो [illegible] [illegible] भी समझ जावेंगे। [illegible] भारत में बहुत ही है। बाबा फिर कहते [illegible] [illegible] [illegible] छपवायेंगे। वो फिर आप ही [illegible] देंगे। मुख्य तो इन चित्रों ही से सर्विस होती है। गांव-2 में भी जावेंगे, [illegible] की सन्यासी लोग [illegible] पुरुष विलायती [illegible] करने लगेंगे। कहेंगे कि ब्र,कु,कु [illegible] सिर्फ [illegible] नशा-2 ही कहती रहती है। पता नहीं कि

यह ब्र,कु,कु, है ही कौन। नां कब सुना नां ही शास्त्र मे पढा है। समझते नही है। प्रजापिता ब्रह्मा दवारा ही जो परमपिता परमात्मा रचना रचते है तो बु,कु,कु ही होगें नां। पत्थर बुधी समझते ही नही है। शास्त्रो मे लिखा है कि ब्रह्मा को करोड भुजाये हजार भुजाये है सो बुधी होती रहती है। लाखो करोडो भुजाये हो जावेगी। तो समझाने के लिये चित्र जरूर चाहिये। सीढी के चित्र भी छप रहे है। इस पर अच्छी रीती समझा सकते हो। भारत ही सतोप्रधान था। अब तमोप्रधान है। फिर सतोप्रधान बनना है। इसके लिये ही बुलाते है। गगां मे पावन होते नही है फिर भी पुकारते है कि पतित पावन आओ। पतित से जो पावन बनावे तो उन को ही गुरू कहा जाता है। गगां मे जो शरीर को धोते है। तुम्हारी आत्मा तो मैं रवादपड गई है वो तो याद ही से निकलती है। बाप कहते है कि मै पतित पावन हूं नां। पतित पावन सीताराम तो मनुष्य का नाम लिया नां। पानी का नाम थोडेई लिया है। परन्तु यह भक्ति मार्ग तो जन्मजन्मान्तर ही से चला आता है। शास्त्रो मे तो झूठ ही लिखा है कि फलाना ज्योति ज्योत समाया। आत्माये जाकर परमात्मा मे लीन होती है। ऐसे क्यो नही कहते है फिर कि परमात्माये जाकर परमात्मा मे लीन होता है। आत्माये लीन होगी। बहुत पुआईन्टस है नां। दूसरी-2 मातोये तो इतना धारन नहीं कर सकती है। अहलयाये कुबजोये गतिकाये है नां। नां पढी हुई है तो और भी अच्छा है। इस समय तो उस पढाई की भी दरकार नही है। जब तक चिठी लिख कर नही देवे तो उस समय तक छोटी बच्ची को नहीं रख सकते है। जिस्मानी नौकरी करने से तो ईश्वरिय नौकरी करना अच्छा है। बाबा भी सर्विस करने आते है। कई तो स्त्रीयां भी ऐसी है जो कि विरक विना रह नही सकती है। वेशयाये कितनी गन्दी होती है। उनका भी तो उधार करना है नां। तुम बच्चो को वेशयाओं के पास भी भाषण करना पडे। यह काम की राय ही कोई ने नही लिखी है। वेशयाओं की सर्विस करना चाहिये। इनकी जमायत होती है। उनमे से थोडी निकल आवे तो बहुत नामाचार हो जावे। बाप तो राय ही देते नां। अगर हिम्मतह सर्विस करने कहता बाबा डायरेक्शन देते है। बडे-2 वेशयालय है। इनकी भी ऐशोशियेसन्स होती है। उनको पकड कर सर्विस करे और बहुतो को पवित्र बना कर दिखावे तो कितना नाम बाला हो जावेगा। बडे-2 वेशालय है। लौग भी कहेंगे कि बु,कु,कु, रक्कु भी पवित्र रहती है फिर दुसरो को भी पवित्र बनाती है। सबसे अधम जूनी तो है वेशयाओं की। इन्ही कारण ही भारत पर वेशायालय नाम पडा है। पहले-2 तो अपनी हमजिन्स का उदार करना है। बाबा के पास राय तो बहुत भेजते रहते है परन्तु काम करने वाला भी कोई होना चाहिये नां। वेशाल्य तो जहां तहां पर होते ही है। पहले तो इनको ही उठाओ जो कि आवाज भी हो। 5-7 अच्छी-2 मातोये निकले पहले तो यह काम करके दिखावें फिर बाद मे गपोडे मारे। सरकार को कहो कि हम तो यह ऊंच कार्य कर रहे है। वेशयाये मरतह है तो वो ही संस्कार भी साथ मे ले जाती है। गृहस्थीके पास जन्म लेकर फिर वेश्या ही बन जाती है। तुम समझाओ कि अब तो शिवाल्य मे चलो। कहेंगें कि खाना कहां से खावेंगे। अच्छा तुम चलो तो सही तुमको खाना भी मिलेगा। तुम इसी सर्विस मे लग जाओ। हम तुमको शिवाल्य का मालिक बनाते है। कितना नाम हो जावेगा। बहादुर अच्छी-2 मातोये सर्विस करने लिये चाहिये। जो सर्विस मे ही लग सकते है वो नाम भेज दें। पहले-2 आवाज ही देहली से होगा। बडे-2 शोसल वर्कस भी वहां पर ही है। अधमों की सर्विस करनी चाहिये नां। साथ-2 मे यह भी सर्विस करते रहो तो तुम्हारा नाम बाला हो जावे। अभी केस आद करने का तो समय है नही है। यह तो है बहुत बडा बाम्ब। सर्विस के लिये तो बाबा बैठे ही है। पैसो की तो इसमे दरकार ही नही है। बाबा के पास तो बहुत है। अपना हीरे सा जीवन बनाते है तो ऐसे ही थोडेई बनता है। तुमको तो 21 जन्मो लिये सुख मिलनेवाला है। अब बाप आये है वापस ले जाने लिये। सिर्फ कहते है कि पवित्र बनो। बाबा राय देते है कि कोशिश करके देखो नाम होगा। वेश्याओं को कब भी निमन्त्रण नही दिया गया है। बाबा डायरेक्शन देते है। साधू सन्त आद ऐसा काम कर भी नही सके। बाबा कहते है कि पहले तो यह काम करके दिखाओ फिर सेमीनार करना। ओ

बाबा बाबा देहली और कानपुर को यह सर्विस करनी है। गडनाईट